MAH/MUL/03051/2012
ISSN 2319 9318

विद्यावार्ता®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

महात्मा गांधी विद्यामंदिर, पंचवटी, नाशिक संचलित,

कर्मवीर भाऊसाहेब हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, निमगांव

तहसील: मालेगांव जिला: नाशिक, महाराष्ट्र - ४२३१११

संगोष्ठी का विषय

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य

संगोष्ठी दिनांक : १०/११ जनवरी २०२३

मुख्य संपादक
डॉ. उज्जन कदम

संपादक
राजाराम शेवाळे

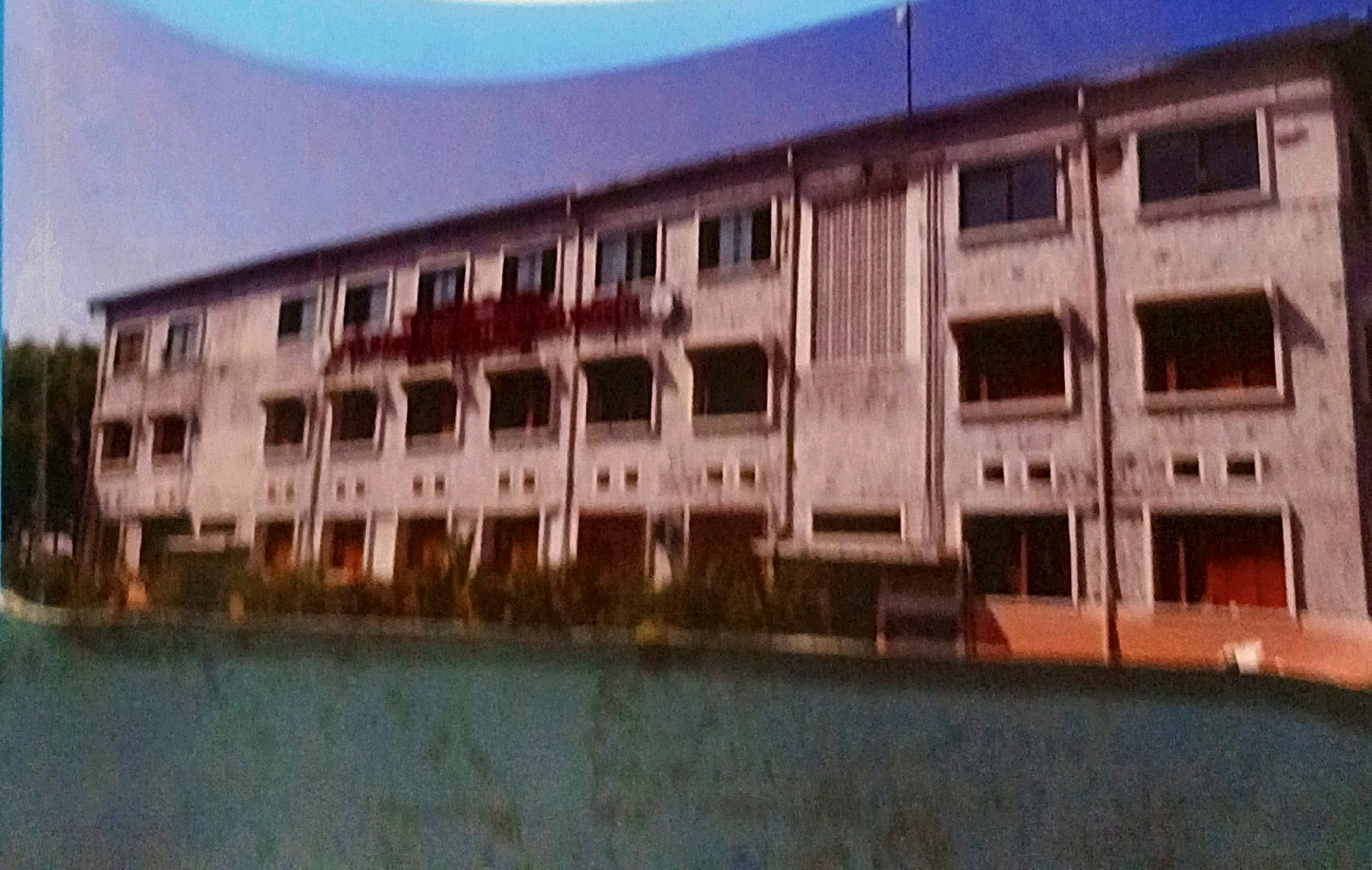

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

महात्मा गांधी विद्यामंदिर, पंचवटी, नाशिक संचालित,

कर्मवीर भाऊसाहेब हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, निमगांव

तहसील–मालेगांव जिला–नाशिक, महाराष्ट्र –४२३२१२

संगोष्ठी का विषय –

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य

संगोष्ठी दिनांक – १०/११ जनवरी,२०२३

मुख्य संपादक – डॉ. उज्जन कदम

संपादक – राजाराम शेवाळे

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

12) उत्तर भारत की समन्वित संस्कृति के विकास में सूफियों की भूमिका
नसीम उद्दीन, अलीगढ़ ||57

13) हिंदी साहित्य में महात्मा गांधी
डॉ ज्योति एन. मंत्री, अमरावती (म.रा.) ||62

14) सुशीला टाकभौरे के साहित्य में दलित विमर्श
रेणु कुमारी, बोधगया ||65

15) वैश्विक परिप्रेक्ष्य में आँचलिक उपन्यास
डॉ. योगिता अपूर्व हिरे–डॉ. पूनम जिभाऊ बोरसे, नाशिक ||69

16) नई शिक्षा नीति के संदर्भ में अनुवाद लेखन और रोजगार
डॉ.नवनाथ गाड़ेकर, जिला–सोलापुर (महाराष्ट्र) ||72

17) हिंदी साहित्य में तमिल भाषियों का योगदान
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन ||77

18) वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अज्ञेय का काव्य
प्रा.डॉ.शिवाजी उत्तम चवरे, कोरेगाव, जि.सातारा ||82

19) वैश्विक परिप्रेक्ष्य में स्त्री–विमर्श
प्रा. अनिता किसन पाटोळे, तह.पाथर्डी जि.अहमदनगर ||88

20) वैश्विक परिप्रेक्ष में आधुनिक नाटक
नितांजली भिमराज म्हस्के–डॉ. विजयकुमार राऊत, महाराष्ट्र ||91

21) वैश्विक परिप्रेक्ष्य में स्त्री विमर्श
बृजेश, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश। ||95

22) उच्च प्राथमिक स्तर के गृहकार्य पर हिंदी भाषा विषय अध्यापक की भूमिका.....
पलमटे तुकाराम शिवदास–प्रा. डॉ. सिद्धार्थ सुधाकरराव होवाळ ||99

23) प्रगतिवाद काव्यधारा में चन्द्रकुँवर बर्त्वाल की कविताएं
डॉ० दमयन्ती असवाल, चमोली, उत्तराखण्ड ||102

24) कितने पाकिस्तान:विभाजन का वैश्विक परिप्रेक्ष्य

www.vidyawarta.com/03_http://www.printingarea.blogspot.com

उत्पादक कर्ता को अधिक मात्रा में मुनाफा हुआ है। इसी कारण यह कहने में संकोच नहीं लगता कि दिन–ब–दिन अनुवाद का महत्व बढ़ रहा है, इसके कारण अनुवादक को सहजता के साथ रोजगार मिलने लगा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

१. डॉ.माधव सोनटक्के, व्यावहारिक हिंदी, छाया पब्लिशिंग हाउस, औरंगाबाद, प्रथम संस्करण, २००२, पृ.१९३

२. डॉ.दंगल झाल्टे, प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, २००४, पृ.१०५

३. डॉ.लक्ष्मीकांत पाण्डेय ध डॉ.प्रमिला अवस्थी, प्रयोजनमूलक हिंदी, आशीष प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, २००५, पृ.३११

४. डॉ.सुकुमार भंडारे, प्रयोजनमूलक तथा व्यावहारिक हिंदी, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, २०१३, पृ.१५५

५. डॉ. अंबादास देशमुख, प्रयोजनमूलक हिंदी अधुनातन आयाम, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, द्वितीय संस्करण, २००६, पृ.४६६

६. डॉ.महेंद्रसिंह राणा, प्रयोजनमूलक हिंदी के आधुनिक आयाम, हर्षा प्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण, २००३, पृ.४४३

७. डॉ कृष्णकुमार गोस्वामी, व्यावहारिक हिंदी और रचना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९९८, पृ.६०

८. तेजपाल चौधरी, प्रयोजनमूलक हिंदी स्वरूप एवं व्याप्ति, विकास प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण, २०१५, पृ.११५

⌘⌘⌘

17

हिंदी साहित्य में तमिल भाषियों का योगदान

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
____
____

****

दक्षिण भारत के हिंदी साहित्यकारों में ऐसे अनेक विद्वान हैं जो हिंदीतर भाषी होते हुए भी हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अमूल्य कार्य किए हैं। 'दक्षिण' का नाम लेने से तमिलनाडु, आंध्र, कर्नाटक व केरल आदि चारों प्रांतों के विद्वान हमारे सम्मुख आते हैं। ये सभी दक्षिण के ही हिंदी साहित्यकार हैं जिनकी देन हिंदी साहित्य साहित्यिक क्षेत्र में इन चारों प्रांतों के विद्वानों योगदान सागर तुल्य।

तमिलनाडु में तेलुगु, मलयालम और कन्नड भाषी हिंदी विद्वान लोग भी अनेक हैं। दक्षिण भारत की तेलुगु, मलयालम और कन्नड भाषाओं की वर्ण मालाएँ, अल्पप्राण–महाप्राण की ध्वनियाँ और उच्चारण आदि संस्कृत से ही प्रभावित हैं। और इन भाषाओं ने संस्कृत के करीब ७५ प्रतिशत के शब्दों को आत्मसात कर लिया है। इसलिए तेलुगु, मलयालम, कन्नड भाषियों को हिंदी सीखने में कोई कठिनाइयाँ नहीं होतीं जिसका सामना तमिल भाषियों को करना पड़ता है। तमिल, संस्कृत या अन्य किसी भाषा से प्रभावित नहीं है। तमिल में अल्पप्राण, महाप्राण की ध्वनियाँ नहीं। स्वर और व्यंजण वर्ण भी हिंदी और संस्कृत की तुलना में बहुत कम हैं। जहाँ स्वयं हिंदी भाषी लोग उच्चारण, लिंग भेद की पहचान, ने विधि का प्रयोग आदि विषयों में भूल कर बैठते हैं, वहाँ तमिल भाषियों के लिए इन बातों की अधिक कठिनाइयों का सामना करना स्वाभाविक है।

तमिलनाडु में हिंदी के सही प्रचार और शिक्षण

के अभाव के कारण दक्षिण के अन्य प्रान्तों की तुलना में तमिलनाडु में हिंदी विद्वनों और लेखकों की संख्या आजकल नहीं के बराबर है।

इस स्थिति में हिंदी में लिखने वाले ठेठ तमिल भाषी लोग विरले मिलते हैं। ऐसे विरलों में श्री शौरिराजन, डॉ. एम शेषन, डॉ. पी.के. बालसुब्रमण्यम, डॉ. एम. गोविंदराजन, श्री टी.ई.एस. राघवन जैसे कुछ ही उल्लेखनीय लोग मिलते हैं जिनकी मातृभाषा मात्र तमिल है। इन लोगों के द्वारा मौलिक रचनाओं के साथ–साथ हिंदी में काफी अनुवाद का काम भी हुआ है।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से राष्ट्रीय एकता को ध्यान में रखते हुए तमिल से हिंदी, हिंदी से तमिल दोनों भाषाओं में अनुवाद, मौलिक रचना, पत्रकारिता और सांस्कृतिक आदान–प्रदान की प्रदर्शनी द्वारा हिंदी साहित्यिक क्षेत्र में डॉ. एम.गोविन्दराजन की जो देन है, वह अमूल्य है।

हिंदी, तमिल दोनों भाषाओं में डॉ. गोविन्दराजन की पचास से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनका साहित्यिक सेवा काल पचपन साल से अधिक है। सन् १९६६ में बाल साहित्यकार के रूप में आपने साहित्यिक क्षेत्र में पाँव रखा था जब तमिल में बच्चों के लिए कविताएँ लिखकर प्रकाशित कीं। सन् २०१६ में जब आप की एक पुस्तक प्रकाशित हुई तब इलाहाबाद के विद्वानों ने उन पर 'डॉ. गोविन्दराजन का पचास वर्षीय साहित्यिक सफरनामा' नामक छे सौ पृष्ठों का ग्रन्थ प्रकाशित किया। तमिलनाडु के एक हिंदी विद्वान के लिए ऐसा जो सम्मान उत्तर भारत में मिला, यही बात हिंदी के प्रति उनकी देन कितनी है, इसे प्रकट करती है। यहाँ एक उल्लेखनीय बात यह भी है कि इलाहाबाद की एक संस्था साहित्य संवर्द्धन मंच द्वारा डॉ. गोविन्दराजन के नाम पर, द्वि भाषी साहित्यकारों को, याने दो भाषाओं में काम करने वाले साहित्यकारों को 'डॉ. गोविन्दराजन का भाषा सेतु सम्मान' देकर सम्मानित कर रही है। इस बात से पता चलता है कि डॉ. गोविन्दराजन की हिंदी के प्रति देन कितनी हो सकती है।

अब मैं यहाँ डॉ. गोविंदराजन की साहित्यिक देन की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत करना चाहती हूँ।

आपका जन्म तमिलनाडु के तंजाऊर में हुआ जो ऐतिहासिक एवं ललित कलाओं के लिए सुप्रसिद्ध शहर है। कालजयी साहित्यकार डॉ. गोविन्दराजन आजकल अस्सी वर्ष के हो गए हैं। आप प्रसिद्ध वक्ता भी हैं। आप की वाकपटुता में तंजाऊर माटी की महक और प्रभाव आज भी आप में झलकता है। डॉ. एम. गोविंदराजन का जन्म तमिलनाडु का खलिहान माने जाने वाला ऐतिहासिक प्रसिद्ध शहर, ललित कलाओं की भूमि एवं धार्मिक स्थल तंजाऊर में १३ जुलाई १९४४ में हुआ। आप रामकृष्ण मिशन हायर सेकण्डरी स्कूल (मेईन) में हिंदी शिक्षक रहे। आप बचपन से ही सार्वजनिक कार्यों में बहुत रुचि लेते थे। अत: अध्यापन कार्य करते हुए सेवा काल में ही भाषा संगम नामक संस्था में जुड़कर साहित्यिक एवं सामाजिक सेवाएँ करते रहे। यह उल्लेखनीय बात है कि उनके इस सेवा कार्य में उनके स्कूल के सचिव स्वामीजी, प्रधान आचार्य एवं अन्य शिक्षकों का योगदान भी बहुत रहा।

आप के साहित्यक योगदान को इस प्रकार वर्गीकृत कर सकते हैं:

१. प्रदर्शनी कार्य
२. तमिल से हिंदी अनुवाद
३. हिंदी से तमिल अनुवाद
४. मौलिक रचनाएं
५. संपादन कार्य
६. पत्रकारिता
७. हिंदी–तमिल डबिंग काम
८. प्रयाग नगरी में तिरुवल्लुवर के नाम पर सड़क का नामकरण
९. पुरस्कार एवं सम्मान

अब हम उपर्युक्त इन विषयों की संक्षिप्त जानकारी देखेंगे:

१. प्रदर्शनी कार्य :

राष्ट्रीय एकता के दृष्टिकोण में सांस्कृतिक आदान–प्रदान को लेकर तमिल भाषा, तमिल संस्कृति एवं तमिल साहित्य से संबंधित बातों को उत्तर भारत के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में हिंदी माध्यम

से में प्रदर्शित करना और इसीतरह तमिलनाडु में हिंदी का कार्य करना आप का विशेष कार्य है। इसके अंतर्गत तमिल के संगम साहित्य, तमिल हिंदी का अनन्य संबन्ध, सीतायण, महाकवि तुलसी दास, तलिनाडु में हिंदी का शिक्षण, राष्ट्रीय आन्दोलन में तमिल का योगदान, तिरुक्कुरल और हिंदी अनुवाद, विश्व की शास्त्रीय भाषाएँ जैसे अनेक विषयों की प्रदर्शनियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। इस तरह तमिलनाडु में हिंदी भाषा, साहित्य व संस्कृति की प्रदर्शनी तथा उत्तर भारत में तमिल भाषा साहित्य व संस्कृति की प्रदर्शनी आप का मुख्य काम रहा है। ऐसी सांस्कृतिक प्रदर्शनियों को लेकर उत्तर भारत के जसरा, गौहनिया, करछना, घूर्पुर, रामपुर जैसे गाँव–गाँव में घूमकर अस्सी साल की अवस्था में प्रचार करना हिंदी साहित्यिक क्षेत्र में मील के पत्थर का काम है।

२. तमिल से हिंदी अनुवादः

सरकारी योजना के तहत संगम साहित्य के १८ ग्रंथों का, याने ध्द्धुत्तध्दै, पट्टुप्पाट्टु के हिंदी पद्यानुवाद का कार्य आपके नेतृत्व में पूरा हुआ है। शास्त्रीय केंद्रीय तमिल शोध संस्थान चेन्नै के लिए तीस लाख रुपयों की इस बृहत् योजना के निदेशक के रूप में आपने यह कार्य पूरा किया है। इसी तरह तिरुक्कुरल का हिंदी में व्याख्या सहित पद्यानुवाद आपने किया है जिसका लोकार्पण स्वयं प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने काशी–तमिल संगमम के उद्घाटन के अवसर पर किया। उत्तर भारत में इस पुस्तक का अति उत्साह से स्वागत किया जारहा है। तमिल के पंच महाकाव्यों में से 'वळैयापति–कुंडलकेशी', आंडाल का 'तिरुप्पावै', अभिरामी भट्टर के 'अभिरामी अंतादि', समकालीन तमिलनाडु के प्रसिद्ध तमिल साहित्यकारों की रचनाएँ आदि का हिंदी में अनुवाद किया है। तमिलनाडु के स्वर्गीय पूर्व मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि द्वारा निर्मित 'कुरल पीठ प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित 'तमिल कहानियाँ' वाली पुस्तक में लिखित आपके दो अनुदित कहानियाँ भी उल्लेखनीय है। अनुवाद में मूल भाषा, मूल भाषा का लिप्यन्त्रण सहित अपना अनुवाद प्रस्तुत करना आप की विशेषता है। इससे हिंदी भाषी, तमिल के शब्दों की सही ध्वनि और उच्चारण से परिचित हो सकते हैं।

३. हिंदी से तमिल अनुवादः

आपने समकालीन हिंदी साहित्य के विभिन्न कहानीकारों की हिंदी कहानियों का तमिल में 'सेट्रिल मलर्न्द सेंतामरै' के नाम से अनुवाद किया है। आपने डॉ रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की कविताओं का तमिल पद्यानुवाद 'तायु नाडे उनक्काह' नामसे किया है और निशंक जी की कहानियों का अनुवाद 'घ्नदु सबदम' नाम से किया है। नरेंद्र मोदी जी कविताएँ 'साक्षी' का आपने तमिल में 'अन्नैयिन् तिरुवडिहळुक्कु' नाम से अनुवाद किया है। ये पुस्तकें चेन्नै के प्रसिद्ध पब्लिशर्स अलैयन्स द्वारा प्रकाशित हैं। पटना के प्रसिद्ध नाटककार डॉ. चतुर्भुज के रचित नाटक 'रावण' का 'रावणन' नाम से तथा बिहार की प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र जी के उपन्यास 'अंजना' का आपने 'अंजनै' नाम से तमिल में अनुवाद किया है। श्रेष्ट अनुवाद के लिए 'अंजनै' को दो पुरस्कार मिल चुके हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपने तुलसीदास के कुल ७ कृतियों का तमिल में अनुवाद किया है। आप के रामचरित मानस का तमिल अनुवाद चेन्नै के वर्द्धमानन पदिप्पगम् द्वारा प्रकाशित है और विनयपत्रिका का अनुवाद चेन्नै के वानदि पदिप्पगम् द्वारा प्रकाशित है। तुलसीदास जी की कृतियों के अनुवाद के कारण उत्तर भारत की दैनिक हिंदी पत्रिका अमर उजाला ने आप को 'तमिल के तुलसी' नाम से गौरवान्वित किया है।

४. मौलिक रचनाएंः

डॉ. श्री विद्या बाल सुब्रह्मण्यन द्वारा संपादित एक पुस्तक है 'डॉ. गोविन्दराजन का निबंध संकलन'। यह आप की मौलिक रचना है। इस पुस्तक में भी तमिल–हिंदी साहित्य के तुलनात्मक निबंध पाये जाते हैं। 'सरल तमिल शिक्षण', 'श्री शक्ति तमिल मार्लै' (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत), 'तमिल हिंदी सुमन माला,' 'तमिल साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' आदि आप की मौलिक रचनाएँ हैं। इन पुस्तकों के द्वारा भाषा शिक्षण के क्षेत्र में आप का अमूल्य योगदान रहा है। आप ने तमिल में लघु रामायण भी पद्य में लिखी है। उसका नाम है– 'गोविन्दन इयट्रिय कुरु रामायण'

अर्थात् गोविन्द रचित लघु रामायण। १०८ पद्यों में राम कथा का वर्णन आपने किया है। इसका अनुवाद डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र जी ने हिंदी में किया है।

५. संपादन कार्य:

आपने कई पुस्तकों का संपादन किया है। नेपाल के जनकपुर धाम का प्रसिद्ध काव्य है 'सीतायण'। मैथिली और नेपाली शब्द भरा यह काव्य अवधी भाषा में रचित है। इस काव्य का हिंदी अनुवाद करवाकर पुरा सम्पादन कार्य आपने सम्भाला है। यह काव्य १००० पृष्ठों में प्रकशित है। इसतरह अनेक पुस्तकों और स्मारिकाओं का संपादन आपने किया है। आपने प्रकाशक के रूप में भी कई पुस्तकों का प्रकाशन किया है। उल्लेखनीय बात यह है कि अस्सी बरस की इस उम्र में भी साहित्यिक काम से आप विमुक्त नहीं है। हाँ, आज भी आप अपने ही संपादित पुस्तक 'सीतायण' का तमिल में अनुवाद कार्य जारी रखा है।

६. पत्रकारिता:

आप की अनेक रचनाएँ अनेक पत्र–पत्रिकाओं और विशेषांकों में प्रकाशित हैं। मगर पत्रकारिता के क्षेत्र में आप का विशेष योगदान रहा है। आप दस साल तक 'आदान–प्रदान' नामक तमिल–हिंदी त्रैमासिक पत्रिका के संपादक और प्रकाशक रहे। इस पत्रिका में आप जो संपादकीय लिखते थे, वह उत्तर भारत में बहुत प्रसिद्ध था। कई बार 'नवयुग' जैसी अनेक पत्रिकाएँ आप के 'संपादकीय' लेख को साभार पुनर्मुद्रित करती रहीं। इसके अलावा 'सूर सौरभ' नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन भी आप करते थे जिस के संपादक डॉ. एन.सुन्दरम थे। इसमें भी आप सह सम्पादक बनकर कार्य करते थे। लगातार १० वर्ष तक पत्रकारिता के क्षेत्र में आप अपना अमूल्य योगदान देते रहे।

७. हिंदी–तमिल डबिंग जैसे अन्य क्षेत्रों में काम:

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रस्तुत हिंदी साहित्यकारों मुन्शी प्रेमचंद और कबीरदास की वीडियो का हिंदी से तमिल अनुवाद और तमिल डबिंग के कार्य में आप का योगदान प्रशंसनीय रहा है। कहने का मतलब है कि आप अपने लेखन के कार्य को केवल पुस्तक लेखन मात्र में सीमित न रखकर अनेक क्षेत्रों और अनेक विधाओं में तमिल–हिंदी भाषाओं को लेकर विशिष्ट कार्य करते रहते हैं।

८. प्रयाग नगरी में तिरुवल्लुवर के नाम पर सड़क का नामकरण:

आप भारत के अन्य प्रान्तों में तमिल संस्कृति का प्रचार हिंदी माध्यम से करना अपना लक्ष्य मानते हैं। इस दिशा में आप ने एक महान कार्य किया है। बड़े ही के लगन व सतत प्रयत्न के बाद आपने इलाहाबाद नगर निगम की परिषद में प्रस्ताव पारित कराके इलाहाबाद त्रिवेणी सांगम के यमुना नदि के दक्षिणी किनारे वाली सड़क का नामकरण तिरुवल्लुवर के नाम पर 'तमिल के संत कवि तिरुवल्लुवर का मार्ग' रखकर, महापौर द्वारा विधिवत लोकार्पण कार्य भी सपन्न किया है। इस कार्य में इलाहाबाद के हिंदी विद्वान और अन्य मनीषियों के योगदान का उल्लेख करके उनके प्रति सदा नतमस्तक होते दिखाई देने वाले डॉ. एम. गोविंदराजन की सार्वजनिक एवं सामाजिक सेवाओं के कारण उनके साहित्यिक सेवा का मूल्य और ऊँचा उठता है।

९. पुरस्कार एवं सम्मान:

राष्ट्रपति द्वारा सम्मान:

आप की 'भाषाई एकता द्वारा की गई राष्ट्रीय एकता की सेवा' के लिए आपको केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा पाँच लाख रुपए का पुरस्कार देकर सन् २०१७ में राष्ट्रपति महामहिम प्रणाब मुखर्जी द्वारा सस्म्मानित किया गया।

अन्य कुछ उल्लेखनीय पुरस्कार व सम्मान:

अमूल्य साहित्यिक योगदान के लिए आप भारत के विभिन्न राज्य सरकारों और केन्द्र सरकार द्वारा अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हैं। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा दो लाख रुपए सहित सौहार्द पुरस्कार (२०१४), श्री शक्ति तमिल मालै पुस्तक केलिए केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली द्वारा एक लाख रुपए का पुरस्कार, इकावन हजार रुपए सहित इफ्को राज भाषा पुरस्कार नई दिल्ली द्वारा (२०११) राजभाषा सम्मान, इकतीस हजार रुपए सहित श्रेष्ठ अनुवाद के लिए बाल कृष्ण गोयंका पुरस्कार (२०१३),

बिहार सरकार द्वारा पच्चीस हजार रुपए का गंगाशरण सिंह पुरस्कार (२००२), तथा नल्लि तिसैयघ्ढुम का भाषा भूषण पुरस्कार आदि आदि। भारत और नेपल के अनेक गैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा भी आप सम्मानित हैं। इस तरह छोटे–बड़े और ६०–७० से अधिक पुरस्कार एवं सम्मानों से आप अलंकृत हैं।

आपको करीब १० लाख से अधिक पुरस्कार राशि प्राप्त हो चुकी है। उल्लेखनीय बात है कि आप उक्त पूरी पुरस्कार–राशि को अपने लिए न रखकर अनेक संस्थाओं को दान में दे दिया।

उत्तर भारत में डॉ. एम. गोविंदराजन के नाम पर भाषा सेतु सम्मान :

आप सेवा निवृत्ति के उपरांत उत्तर भारत के इलाहाबाद में जाकर भाषा संगम के महासचिव के रूप में हिंदी व तमिल भाषा के तुलनात्मक व अनुवाद के क्षेत्र में सेतु का कार्य सतत कर रहे हैं। यही कारण है कि इलाहाबाद के जसरा से प्रकाशित 'गाँव की नई आवाज' नामक पत्रिका ने (जो तीस सालों से प्रकाशित हो रही है) उनके नाम पर २०१८ में 'डॉ. एम. गोविंदराजन का भाषा सेतु सम्मान' नामक एक सम्मान पुरस्कार की घोषणा की और तब से हर साल द्वि भाषी साहित्यकारों को बुलाकर सम्मानित किया जा रहा है। एक दक्षिण भारतीय व्यक्ति के लिए, खासकर हिंदी विरोध के लिए प्रसिद्ध तमिलनाडु के एक तमिल भाषी हिंदी साहित्यकार केलिए जो सम्मान हिंदी भाषियों ने दिया है उसके लिए उत्तर भारत के सभी हिंदी भाषियों के प्रति तमिलनाडु के हिंदी साहित्यकार तथा हिंदी प्रेमियों की ओर से मैं नतमस्तक हूँ।

हाल ही में, दिसंबर २०२२ में, काशी में आयोजित काशी तमिल संगमम के कार्यक्रम में आपके द्वारा हिंदी में अनुदित तिरुक्कुरल पुस्तक का विमोचन भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा हुआ। इस पुस्तक में आपने तिरुक्कुरल का मूल भाषा का लिप्यन्तरण, तमिल उच्चारण सहित और, इसका हिंदी पद्यानुवाद व्याख्या सहित प्रस्तुत किया है। साथ ही तमिल साहित्य में तिरुक्कुरल का स्थान, तिरुक्कुरल की विशिष्टता, तिरुक्कुरल के धर्म, अर्थ, काम, की व्याख्या, तिरुक्कुरल के बारे में प्राचीन ग्रंथों में प्राप्त विभिन्न विद्वानों का मत, तमिल भाषा की विशेषता, तमिलभाषियों के तमिल भाषा के प्रति अनन्य श्रद्धा व प्रेम भावना, तोल्काप्पियम से लेकर पत्तु पाट्टु, एट्टु तोगई, आदि संगम साहित्य की जानकारी, विद्यमान है। इस दृष्टि में आपका योगदान सराहनीय रहा है। इस कार्यक्रम के दौरान पवित्र नगरी प्रयागराज के दौरे में आये तमिलभाषी डेलीगेट्स के लिए आपने भाषा सेतु बनकर उनकी यात्रा को सफल बनाया।

निष्कर्ष :

'भाषा भेद दूर करें! भावात्मक एकता कायम करें!' इसी सिद्धांत को लेकर भाषा के क्षेत्र में आप सेवा कर रहे हैं। आपने हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए अपना संपूर्ण जीवन न्योछावर किया है। तमिल व हिंदी उनकी दो आँखें हैं। उत्तर में तमिल व दक्षिण में हिंदी का प्रचार आप का लक्ष्य रहा है। अर्थात् भाषा सेतु कार्य को अनवरत कर रहे हैं जो कि वास्तव में स्तुत्य है।

सामान्यतः तमिल भाषी हिन्दी विद्वान लोग हिंदी में ही अपना काम करते दिखते हैं। मगर डॉ. गोविन्दराजन जी हिंदी के साथ–साथ तमिल में भी सक्षम योग्यता रखते हैं। आप वक्ता, कवि, निबंधकार, अनुवादक, पत्रकार जैसे अनेक रूप में हमारे सामने आते हैं। आप सरल स्वभाव के ही नहीं बल्कि मिलनसार भी हैं। वर्तमान में जीते हुए आप जैसे साहित्यकार से मिलने का अवसर मुझे जो मिला वह मेरा सौभाग्य है। आप की जो जानकारी मुझे मिली, उसकी सत्यता के लिए मैंने आप का साक्षात्कार किया। आप की बेटी के गृह में इन सारी बातों के प्रमाणों को पाकर मैं अपने को धन्य मानती हूँ। इसे मैं अपने लिए गौरव की बात मानती हूँ। वास्तव में हिंदी–तमिल, तमिल–हिंदी साहित्यिक क्षेत्र में तमिल–भाषी डॉ. एम. गोविन्दराजन जी का योगदान अमूल्य, अप्रतिम और अविस्मरणीय है।

ꕤꕤꕤ